Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी
अध्याय 1 संतवाणी
(ब)तुलसीदास

कवि परिचय- 1532 ई में उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के राजापुर गाँव में जन्मे तुलसीदास का बचपन अत्यन्त कठिनाइयों में बीता। कष्टों के दौर से गुजरकर उन्होंने गुरु नरहर्यानन्द व शेष सनातन से शिक्षा ग्रहण की। वे अपनी पत्नी रत्नावली से अति स्नेह रखते थे लेकिन एक दिन रत्नावली द्वारा उत्प्रेरित किए जाने पर उनके हृदय में रामप्रेम जाग्रत हो गया।

तुलसीदास ने अवधी तथा ब्रज भाषा में कई ग्रंथों की रचना की। **रामचरितमानस** उनकी कीर्ति का आधार ग्रंथ है। अन्य प्रसिद्ध ग्रंथों में **विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली, कृष्ण-गीतावली, बरवै रामायण कथा रामलला नहछू** प्रमुख हैं।

तुलसी के काव्य में समन्वय की भावना सर्वोपरि है उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से आदर्शसमाज की जो कल्पना प्रस्तुत की है, वह कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती तुलसी का काव्य भारतीय समाजका आदर्श पथप्रदर्शक है।1623 ई. में तुलसीदास जीकी मृत्यु हो गयी।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. ईश्वर प्राप्ति में बाधक अवगुण कौन-कौनसे बताए गए हैं?

उत्तर: तुलसीदास जी के अनुसार काम, क्रोध, मद, लोभ और घर-परिवार से मोह आदि अवगुण ईश्वर प्राप्ति में बाधक होते हैं।

प्रश्न 2. तुलसीदास के अनुसार इन्द्रियों की सार्थकता किससे सम्भव है?

उत्तर: तुलसीदास जी के अनुसार इन्द्रियों की सार्थकता, उनके परमार्थ या ईश्वर प्राप्ति में प्रयोग किए जाने पर ही सम्भव है।

प्रश्न 3. कवि के अनुसार मनुष्य के जीवन में संगति का क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: कवि के अनुसार मनुष्य जैसी संगति करता है, वैसा ही बन जाता है, व्यक्ति सत्संगति से भला और कुसंगति से दुर्बल और निन्दनीय हो जाता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. "नदी नाव संयोग द्वारा तुलसी ने संसार में जीने का क्या तरीका बताया है?

उत्तर: 'नदी नाव संजोग' के द्वारा तुलसी ने संसार में जीने का यह तरीका बताया है कि हमें सभी से मेलजोल रखना चाहिए। किसी से वैर भाव नहीं रखना चाहिए। मेल जोल से ही हम सुखदजीवन जी सकते हैं। जिस तरह से लोहे की नौका नदी में डूबती नहीं है बल्कि हिलते दुलते, नदी के पानी से मेलजोल रखते हुए तैरती हुई एक किनारे से दूसरे किनारे पहुंच जाती है, उसी तरह हमें भी अपनी जीवन रूपी नौका को संसार रूपी नदी से पार लगाना चाहिए।

प्रश्न 2. "राम कृपा तुलसी सुलभ, गंग सुसंग समान।" पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पंक्ति में तुलसीदास जी ने भगवान राम की कृपा से गंगा और सत्संगति प्राप्त होना सुलभ बताया है। गंगा और सत्संगति दोनों का स्वभाव एक जैसा होता है। दोनों ही सम्पर्क में आने वाले को अपने जैसा पवित्र और सज्जन बना देते हैं। जो गंगा के जल में मिलता या प्रवेश करता है। उसे गंगा अपने समान ही पवित्र बना देती है। इसी प्रकार सत्संगति भी साथ में रहने वाले व्यक्ति को सद्गुणों से युक्त सज्जन पुरुष बना दिया करती है।

प्रश्न 3."अब तौ दादुर बौलिहे, हमें पूछिहैं कौन' में तुलसी का क्या भाव है?

उत्तर: कोयल वसन्त ऋतु में अपनी मधुर वाणी से सभी के मन को प्रसन्न

किया करती है। वर्षा ऋतु आने पर कोयलों की कूक सुनाई नहीं देती। तुलसी इस तथ्य के द्वारा सन्देश देना चाहते हैं कि बुद्धिमान और गुणी व्यक्ति को उचित स्थान और समय पर ही अपने गुण का प्रदर्शन करना चाहिए। जहाँ अपनी ही अपनी हाँकने वाले बकवादी और अज्ञानी लोगों का बहुमत हो वहाँ शान्त रहना ही अच्छा होता है। वर्षा ऋतु में जब हजारों मेंढ़क एक साथ टर्राएँगे तो बेचारी कोयल की मधुर ध्वनि कौन सुन पाएगा।

संकलित दोहों की सप्रसंग व्याख्याएँ

1 क्रोध मद लोभ रत, गृहासक्त दुःख रूप।

ते किमि जानहिं रघुपतिहिं, मूढ़ परे भव कूप॥

कठिन शब्दार्थ -काम = कामनाएँ, भोग की इच्छा। मद = अहंकार, घमण्ड। रत = लगे हुए। गृहासक्त = परिवार के मोह में फंसे हुए। ते = वे। किमि = कैसे। रघुपतिहिं = भगवान राम को। मूढ़ = मूर्ख। भव कूप = संसाररूपी कुआँ, सांसारिक विषय।

सन्दर्भ तथा प्रसंग - हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित प्रस्तुत दोहा तुलसीदास रचित दोहावली से लिया गया है। इस दोहे में तुलसीदास जी बता रहे हैं कि काम, क्रोध, लोभ आदि विकारों में और पारिवारिक मोह में फँसे मूर्ख लोग कभी भगवान राम की महत्ता नहीं जान सकते॥

व्याख्या- तुलसी कहते हैं जो लोग काम, क्रोध, मद, लोभ आदि दुर्गुणों से ग्रस्त हैं तथा घर-परिवार के मोह को नहीं त्याग सकते, वे संसार रूपी कुएँ में पड़े हुए हैं। ऐसे मूर्ख कभी भगवान राम की महिमा और कृपा का लाभ नहीं पा सकते।

विशेष-

(i) तुलसीदास जी का स्पष्ट सन्देश है कि राम की कृपा पाने और सांसारिक बन्धनों से मुक्त होने के लिए व्यक्ति को काम, क्रोध, मद, लोभ आदि दुर्गुणों का त्याग करना अनिवार्य है।

(ii) दुर्गुणों से ग्रस्त और गृहासक्ति के जंजाल में फंसे लोगों को कवि ने मूर्ख माना है क्योंकि वे सांसारिक विषय-भोगों में लिप्त होकर अपने जीवन को व्यर्थ कर रहे हैं।

(iii) भाषा साहित्यिक ब्रज है। तत्सम तथा तद्भव शब्दों का सहज मेल है।

(iv) कथन शैली उपदेशात्मक तथा व्यंग्यात्मक है।

(v) 'काम क्रोध' में अनुप्रास तथा भव कूप' में रूपक अलंकार है।

2. कहिबे कहँ रसना रची, सुनिबे कहँ किए कान।
धरिबे कहँचित हित सहित, परमारथहिं सुजान॥

कठिन शब्दार्थ- कहिले कहँ = कहने या बोलने के लिए। रसना = जीभ या वाणी। धरिबे कहँ = धारण करने या रखने के लिए। चित = चित्त। हित = भलाई। परमारथहि = सर्वोत्तम वस्तु को, आत्मकल्याण को।

सन्दर्भ तथा प्रसंग - हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित प्रस्तुत दोहा तुलसीदास रचित दोहावली से लिया गया है।

प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी 'परमार्थ' अर्थात् सबसे उत्कृष्ट लक्ष्य, ईश्वरप्राप्ति में ही शरीर के अंगों को लगाने का उपदेश कर रहे हैं।

व्याख्या- कवि कहते हैं कि ईश्वर ने मनुष्य को बोलने के लिए जीभ या वाणी दी है। सुनने के लिए कान दिए हैं और कल्याणकारी शिक्षाओं को धारण करने के लिए चित्त दिया है। इन सभी अंगों की सार्थकता इसी में है कि मनुष्य इनका उपयोग सबसे श्रेष्ठ लक्ष्य अर्थात् परमार्थ में ही करे। सांसारिक विषयों के उपभोग में इनकी क्षमताओं को नष्ट न करे॥

विशेष-

(i) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, ये चार मानव जीवन के पुरुषार्थ माने गए हैं। इनको प्राप्त करना ही 'पुरुष' होने का अर्थ है। परन्तु इन सबसे बढ़कर 'परमार्थ' आत्मज्ञान या मोक्ष-प्राप्ति मानी गई है।

(ii) इन्द्रियों की सार्थकता कवि ने परमार्थ सिद्धि में ही मानी है।

(iii) सरल ब्रजभाषा का प्रयोग है।

(iv) अनुप्रास अलंकार का सहज प्रयोग है।

3. तुलसी भलो सुसंग ते, पोच कुसंगति सोई॥

नाउ, किन्नरी तीर असि, लोह बिलोकहु लोइ॥

कठिन शब्दार्थ- भलो = अच्छा। पोच = बुरा, अशोभनीय। सुसंग = सत्संग। सोइ = वही। नाउ = नाव, नौका। किन्नरी = एक प्रकार की वीणा। तीर = बाण। असि = तलवार। लोह = लोहा। बिलोकहु = देखो। लोइ = नेत्र॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित प्रस्तुत दोहा तुलसीदास रचित दोहावली से लिया गया है। प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी ने सत्संग और कुसंग के प्रतिफल का परिचय सुंदर दृष्टांतो से करवाया है।

व्याख्या- कवि तुलसी कहते हैं कि जो व्यक्ति सत्संग करने पर भला और प्रशंसनीय हो जाता है, वही कुसंग में पड़ने पर बुरी और निंदनीय हो जाता है। नाव और किन्नरी वीणा के निर्माण में काम आने वाला लोहा सबको अच्छा लगता है वही लोहा बाण और तलवार बनाने में काम आने पर हानिकारक होने के कारण प्रशंसा का पात्र नहीं रहता। यह सत्संग और कुसंग का ही परिणाम है।

विशेष-

(i) लोहे का उदाहरण देकर कवि ने सत्संग तथा कुसंग के प्रभावों से परिचित कराते हुए सत्संगति करने की प्रेरणा दी

(ii) भाषा तद्भव और तत्सम शब्दावलीयुक्त ब्रज है।

(iii) दोहे में उदाहरण अलंकार का प्रयोग हुआ है।

4. राम कृपा तुलसी सुलभ, गंग सुसंग समान।

जो जल परै जो जन मिले, कीजै आपु समान॥

कठिन शब्दार्थ - सुलभ = सहज ही प्राप्त। गंग = गंगा। आपु समान = अपने समान।

सन्दर्भ तथा प्रसंग- हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित प्रस्तुत दोहा तुलसीदास रचित दोहावली से लिया गया है। प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी ने गंगा और सत्संग को समान स्वभाव वाला बताया है।

व्याख्या- कवि का कहना है कि भगवान राम की कृपा से सहज ही प्राप्त होने वाले गंगा और सुसंगति दोनों का प्रभाव समान होता है। गंग के जल में जो भी मिलता है उसे गंगा अपने समान पवित्र बना देती है। इसी प्रकार जो सत्संग अपना लेता है वह सत्पुरुषों जैसा ही पवित्र आचरण वाला बन जाता है।

विशेष-

(i) कवि का संकेत है कि गंगा स्नान और सत्संगति राम की कृपा होने पर ही प्राप्त होती है।

(ii) 'गंग सुसंग समान' में अनुप्रास अलंकार है।

(iii) सरल ब्रजभाषा का प्रयोग है।

(iv) प्रवचनात्मक कथन शैली है।

5. तुलसी या संसार में, भाँति-भाँति के लोग।

सबसौं हिल-मिल चालिए, नदी-नाव संयोग।

कठिन शब्दार्थ - भाँति-भाँति = भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले। हिल-मिल = प्रेम से। चालिए = चलिए, व्यवहार कीजिए। नदी-नाव संयोग = थोड़े समय का मिलन।

सन्दर्भ तथा प्रसंग - हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित प्रस्तुत दोहा तुलसीदास रचित दोहावली से लिया गया है। प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले लोगों से प्रेम सहित मिलते-जुलते हुए जीवन बिताने का संदेश दे रहा है।

व्याख्या- कवि तुलसी कहते हैं कि इस संसार में नाना प्रकार के स्वभाव वाले लोगों से व्यक्ति का मिलन होता है। मनुष्य से जहाँ तक बने सभी से मिल-जुलकर जीवन बिताना चाहिए। हठ या अहंकारवश किसी से विरोधी व्यवहार नहीं करना चाहिए। नदी और नाव का अद्भुत संयोग होता है। लोहे की नाव

पानी में डूबती नहीं है बल्कि पानी से मेलजोल करते हुए आगे बढ़ती हुई दूसरे किनारे पहुंच जाती है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य को भी सबसे हिल मिलकर चलते हुए जीवन रूपी नौका को संसार रूपी नदी से पार लगाना है।

विशेष-

(i) 'नदी नाव संयोग' लोकोक्ति का प्रभावशाली प्रयोग हुआ है।

(ii) छोटे से मानव जीवन को विरोधों, दुराग्रहों और लड़ने-झगड़ने में नष्ट करने के बजाय उसे प्रेमपूर्वक हिल-मिल कर बिताना ही बुद्धिमानी है, यही दोहे का संदेश है।

(iii) 'भाँति-भाँति' में पुनरुक्ति प्रकाश, 'हिल-मिल चालिए' तथा 'नदी-नाव' में अनुप्रास अलंकार है।

(iv) सरल भाषा में कवि ने बड़ा उपयोगी परामर्श दिया है।

6. तुलसी पावस के समय, धरी कोकिलन मौन।
अब तौ दादुर बोलिहे, हमें पूछिहै कौन॥

कठिन शब्दार्थ- पावस = वर्षा ऋतु। धरी = धारण कर लिया। कोकिलन = कोयलों ने। दादुर = मेंढक।

सन्दर्भ तथा प्रसंग - हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित प्रस्तुत दोहा तुलसीदास रचित दोहावली से लिया गया है।

प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी कोयलों और मेंढकों के माध्यम से सन्देश दे रहे हैं कि जहाँ गुणों की पूछ न हो वहाँ मौन रहना ही बुद्धिमानी है।

व्याख्या- वर्षा ऋतु आने पर कोयलों ने मौन धारण कर लिया क्योंकि उस समय तो मेंढक ही चारों ओर बोलेंगे। उनकी टर-टर में उन्हें कौन सुनना चाहेगा। अर्थात जहां दर्जनों की पूछ होने लगती है वहां सज्जनों को कोई नहीं पूछता है। इसलिए सज्जन व्यक्तियों को समय और परिस्थिति के अनुसार मौन धारण कर लेना चाहिए। मूर्खों की सभा में सज्जनों का आदर करने वाला कोई नहीं होता है।

विशेष-

(i) जहाँ गुणों के पारखी न हों और मूर्ख लोग अपनी ही हाँक रहे हों, वहाँ

गुणवान का मौन रहना ही ठीक है क्योंकि वहाँ उसके गुणों का आदर नहीं हो सकता। यही परामर्श कवि ने दिया है।

(ii) साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग है। शैली अन्योक्तिपरक है।

(iii) अन्योक्ति अलंकार का कुशल प्रयोग हुआ है।

7.तुलसी असमय के सखा, धीरज धरम बिबेक।
साहित साहस सत्यव्रत, राम भरोसो एक॥

कठिन शब्दार्थ- असमय = बुरा समय, संकट। सखा = मित्र, साथी। धीरज = धैर्य। साहित = साहित्य, श्रेष्ठ ग्रन्थ। सत्यव्रत = सत्य पर अडिग रहना॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित प्रस्तुत दोहा तुलसीदास रचित दोहावली से लिया गया है। प्रस्तुत दोहे में तुलसीदास जी बता रहे हैं कि बुरा समय आने पर व्यक्ति के कौन से गुण उसका साथ दिया करते हैं।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

व्याख्या- तुलसीदास जी कह रहे हैं कि जब मनुष्य का विपरीत समय आता है अर्थात विपत्तियां आती है तो धैर्य, धर्मपालन, विवेक, श्रेष्ठ ग्रन्थ, साहस, सत्य पर दृढ़ रहना और एकमात्र भगवान पर पूरा भरोसा रखना, ये ही वे गुण हैं जो संकट के समय मनुष्य का साथ दिया करते हैं। इनके बल पर व्यक्ति बड़े-से-बड़े संकट मे पार हो जाता है।

विशेष-

(i) सच्चा मित्र वही होता है जो बुरे समय में साथ देता है। उपर्युक्त गुणों के रहते हुए संकट में मनुष्य को किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता नहीं

होती। ये ही मनुष्य के वास्तविक मित्र होते हैं। यही दोहे का भाव है।

(ii) भाषा में सहज प्रवाह है। भावानुकूल शब्दावली का प्रयोग है।

(iii) कथन शैली प्रवचनात्मक है।

(iv) ‘ धीरज धरम’ तथा ‘साहित, साहस, सत्यव्रत’ में अनुप्रास अलंकार है।